Dainik Bhaskar (Indore), 10th January 2026, Page – 19 (Front Page – 04)

स्टार्टअप को टेक्नोलॉजी के लिए पेटेंट देने की बात कही • दो स्टार्टअप को मिली 2 करोड़ रुपए तक की फंडिंग, एम्स रायपुर के 8 प्रोजेक्ट पुरस्कृत

नवाचार ऐसे कि एआई क्लेम प्रोसेस कर सके, 10 सेकंड में बना दे बिल

आईआईटी में 56 प्रोजेक्ट को मिली 14 करोड़ की फंडिंग; 21 स्टार्टअप, 29 रिसर्च प्रोजेक्ट और 6 को स्कॉलरशिप दी गई

भास्कर संवाददाता | इंदौर

आईआईटी इंदौर के इन्क्यूबेशन सेंटर दृष्टि सीपीएस फाउंडेशन द्वारा शुक्रवार को देशभर से चयनित 56 स्टार्टअप और प्रोजेक्ट्स को 14 करोड़ रुपए तक की फंडिंग दी गई है। इसमें 21 स्टार्टअप तो थे ही साथ ही 29 रिसर्च प्रोजेक्ट भी थे और 6 पीएचडी छात्रों को संस्था द्वारा चाणक्य फेलोशिप भी दी गई। सर्वाधिक 2 करोड़ रुपए की फंडिंग 2 स्टार्टअप की दी गई है। वहीं, एम्स दिल्ली के प्रोजेक्ट को 1 करोड़ की फंडिंग दी गई।

शुक्रवार को हुए कार्यक्रम में मुख्य अतिथि एम्स रायपुर के निदेशक लेफ्टिनेंट जनरल अशोक जिंदल थे। उनकी टीम के 8 प्रोजेक्ट्स को इस कार्यक्रम में फंडिंग प्रदान की गई। जिंदल ने आईआईटी इंदौर के साथ अपने मरीजों का अनामित डेटा शेयर करने के लिए पहल शुरू करने का वादा किया है।

रायपुर : ईसीजी के काम में ले रहे एआई की मदद

उन्होंने बताया, एम्स रायपुर में एआई की मदद से कई प्रोजेक्ट्स पर काम हो रहा है, खासतौर पर

ट्रायएज के लिए यानी कौन से मरीज को किस स्तर की चिकित्सा सेवा देना है, इसका निर्णय लेना। इसके साथ ही संस्था द्वारा सभी दवाइयों और अन्य मेडिकल स्टॉक के रखरखाव के लिए एआई का इस्तेमाल किया जा रहा है। आईआईटी भिलाई के साथ मिलकर एम्स रायपुर ईसीजी के रिजल्ट पढ़ने के लिए भी एआई की मदद कर रहा है।

सभी को सेंटर ऑफ एक्सीलेंस चरक-डीटी का दौरा भी करवाया

कार्यक्रम में बौद्धिक संपदा-इंटलेक्चुअल प्रॉपर्टी राइट्स को लेकर भी एक सत्र का आयोजन किया गया जिसमें दृष्टि द्वारा स्टार्टअप को अपनी टेक्नोलॉजी के लिए पेटेंट देने और उसे कमर्शियलाइज करने में मदद देने की बात कही गई। इसके अलावा सभी को आईआईटी के डिजिटल हेल्थकेयर के सेंटर ऑफ एक्सीलेंस चरक-डीटी का दौरा भी करवाया गया।

एआई एजेंट फ्रॉड का पता लगाकर सही क्लेम पास कर सकता है

फंडिंग लेने वाले एक और स्टार्टअप चिकित्सा ने ऐसा प्लेटफॉर्म बनाया है, जिसका एआई एजेंट फ्रॉड का पता लगाकर सही क्लेम पास कर सकता है, मरीज से डॉक्टर बनकर बातचीत करके पूरा केस समझकर डॉक्टर को इलाज का प्लान बनाकर दे सकता है। खराब हैंडराइटिंग समझ सकता है। पुणे स्थित यह स्टार्टअप विगरस एआई द्वारा इसकी मदद से 350 करोड़ रुपए के 5 लाख से ज्यादा क्लेम प्रोसेस किए जा चुके हैं।

भास्कर इनसाइट

प्रिस्क्रिप्शन के फोटो के आधार पर डिजिटाइज भी कर सकता है

मरीज अस्पताल से डिस्चार्ज होता है तो उसमें कागजी कार्रवाई में घंटों लग जाते हैं। बिल और डिस्चार्ज समरी बनाने में लम्बा समय लगता है। इसे कम करने के लिए दिल्ली के स्टार्टअप ने ऐसा सॉफ्टवेयर बनाया है जो सभी कागजों के फोटो के आधार पर 10 सेकंड में सब कुछ बनकर दे देगा। साथ ही स्टार्टअप डॉक्टर के हाथ से लिखे प्रिस्क्रिप्शन के फोटो के आधार पर डिजिटाइज भी कर सकता है, जिसे आसानी से समझा जा सके।

मानसिक अक्षमताओं से ग्रस्त लोगों को सिखाने बनाया : मिमो

फंडिंग प्राप्त करने वालों में बेंगलुरु का स्टार्टअप मिमो भी शामिल हुआ था। वह एक ऐसा डिवाइस बना रहा है जो मानसिक अक्षमताओं से जुड़े रोग जैसे आटिज्म, एडीएचडी, डाउन सिंड्रोम, अल्जाइमर, पार्किनसंस आदि गंभीर समझी जाने वाली बीमारियों से ग्रसित लोगों को नई चीजें सीखने के लिए बनाया गया है। यह डिवाइस मनुष्य के दिमाग को खेल-कूद की मदद से ट्रेन करता है कि वो नई (या भूली जा चुकी) चीजें कैसे सीखे। इसके खेल तनाव दूर करने में भी मददगार हैं। इसके चलते फाउंडर इसे जिम में भी लागू करवाने का विचार कर रहे हैं।